

PROF. HARKISHAN SINGH

Prof. Harkishan Singh in addition to being a popular pedagogue has been a prominent medicinal chemistry and pharmaceutical history researcher.

2. Prof. Singh's research group at the Panjab University designed neuromuscular blocker, named Chandonium Iodide after Chandigarh city, later the World Health Organization termed it as Candocuronium Iodide, proved to be a clinically usable drug. The Drugs Controller General of India, Ministry of Health, Government of India, granted permission for manufacture and marketing of Chandonium Iodide. It is very rare that new drugs emerge from universities.

3. As a pharmaceutical historian, Prof. Singh has examined the history of pharmaceutical developments in India of the nineteenth and twentieth centuries. His history research studies have been on pharmacopoeias and formularies, pharmaceutical education, pharmacy practice, biographies of pharmaceutical luminaries, and pharmaceutical journalism. He has published over eighty articles and eight books.

4. Born on November 25, 1928, Porf. Singh received his Bachelor of Pharmacy in 1950, from the Panjab University. He obtained his Master of Pharmacy and Ph.D. degrees from the Banaras Hindu University, in 1952 and 1956, respectively. He had the postdoctoral experience of working at the Universities of Maryland and Mississippi in USA, and the University of London in UK.

5. Prof. Singh has served on the teaching faculties of the Banaras Hindu University, the University of Saugar, and the Panjab University, at the latter he is presently Professor Emeritus. There have been completed 48 master and doctoral theses under his supervision.

6. Prof. Singh has lectured on his research at several of the institutions and conferences in India, United States of America, Canada, United Kingdom, Switzerland and China. He delivered invited lectures at the Harvard School of Medicine of the Harvard University, and International Symposium on Molecular Structure sponsored by the International Union of Crystallography at Beijing.

7. In addition to his scientific and history research papers, Prof. Singh has authored and/or co-authored many books and review articles, including several book chapters. He has written extensively on educational, scientific, historical, professional and general issues. It is unusual that scientists engage in writing accounts of their personal lives, but Prof. Singh did it through his autobiography Witness to an Era. He has scripted the experiences of the period of nearly nine decades, inclusive of his rural living, passing through the years when country was in throes of struggle for freedom, and independence bringing with it the partition.

8. Prof. Singh has been on many academic, scientific, professional and governmental bodies. He was a member of the Committee on International Education of Medicinal Chemists of the International Union of Pure and Applied Chemistry, which prepared the Report on the International Education of Medicinal Chemists.

9. Prof. Singh is recipient of several scientific and professional awards and recognitions. He has been a National Fellow of the University Grants Commission, New Delhi. He has been General President of the Indian Pharmaceutical Congress. He received Eminent Pharmacist Award of the Indian Pharmaceutical Association. Lifetime achievements awards have been conferred on him by several bodies; the recent one is the Lifetime Achievement Award by the Punjab Academy of Sciences. Prof. Singh's standing as historian has been recognized through his election to the Academie Internationale d'Histoire de la Pharrnacie. The University of the Sciences in Philadelphia and the Panjab University have conferred upon Prof. Singh the degrees of Doctor of Science (Honoris Causa).



प्रो. हरकिशन सिंह

प्रो. हरकिशन सिंह एक लोकप्रिय शिक्षक होने के साथ-साथ एक जाने-माने चिकित्सकीय रसायन और औषधीय इतिवृत्त शोधकर्ता हैं।

2. पंजाब विश्विवद्यालय में आपके शोध दल ने न्यूरोमस्कुलर ब्लॉक डिजाइन किया था, जिसका नाम चंडीगढ़ शहर के नाम पर चैण्डोनियम आयोडाइड रखा गया, बाद में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसका नाम कैण्डोकुरोनियम आयोडाइड रखा, जिसे चिकित्सकीय रूप से प्रयोग में लाई जाने वाली दवा के रूप में प्रमाणित किया गया। स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार के औषधि महा नियंत्रक ने चैण्डोनियम आयोडाइड के विनिर्माण एवं विपणन की अनुमति प्रदान की थी। ऐसा बहुत ही कम होता है जब किसी नई दवा का आविर्भाव किसी विश्वविद्यालय द्वारा होता है।

3. एक औषधीय इतिहासकार के रूप में आपने भारत में 19वीं एवं 20वीं शताब्दियों के औषधीय विकास के इतिहास की पड़ताल की है। आपके इतिहास से जुड़े शोध अध्ययन, औषधि-संस्कार-ग्रंथों तथा फार्मुलरीज, औषधीय शिक्षा, फार्मेसी प्रैक्टिस, औषधीय क्षेत्र के दिग्गजों की जीवनियों तथा औषधीय पत्रकारिता जगत में मौजूद हैं। आपने 80 से अधिक लेख तथा आठ पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

4. आपका जन्म 25 नवंबर, 1928 को हुआ था। आपने वर्ष 1950 में पंजाब विश्वविद्यालय से फार्मेसी की स्नातक उपाधि प्राप्त की थी। आपने वर्ष 1952 तथा 1956 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से क्रमश: फार्मेसी की परास्नातक तथा पी एच डी की उपाधियां प्राप्त कीं। आपको मैरीलैण्ड एवं मिसीसिपी विश्वविद्यालय, यू एस ए तथा लंदन विश्वविद्यालय, यू के में डॉक्टर उपाधि प्राप्त करने के उपरांत कार्य करने का अनुभव प्राप्त है।

5. आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय तथा पंजाब विश्वविद्यालय की शिक्षण फैकल्टियों में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं तथा इसके बाद आप वर्तमान में प्रोफेसर एमेरिटस हैं। आपके पर्यवेक्षण में 48 परास्नातक एवं डॉक्टरी की थीसिस पूरी की गईं।

6. आपने भारत, यू एस ए, कनाडा, यू के, स्विट्जरलैण्ड तथा चीन में कई एक संस्थानों तथा सम्मेलनों में अपने शोध पर व्याख्यान दिए। आपने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के हार्वर्ड स्कूल ऑफ मेडिसिन तथा बीजिंग में इंटरनेशनल यूनियन ऑफ क्रिस्टलोग्राफी द्वारा प्रायोजित इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑफ मॉलीकुलर स्ट्रक्चर पर आमंत्रित व्याख्यान दिए हैं।

7. आपने वैज्ञानिक एवं इतिहास संबंधी शोध पत्रों के अलावा कई एक पुस्तकों के अध्यायों सहित कई एक पुस्तकों एवं समीक्षा लेखों का लेखन एवं/अथवा सह –लेखन का कार्य किया है। आपने ज्यादातर शैक्षणिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, व्यावसायिक एवं सामान्य मुद्दों पर लिखा है। यह आसामान्य सी बात है कि वैज्ञानिक अपनी निजी जिंदगी का लेखा-जोखा लिखने में व्यस्त हों, परंतु आपने यह कार्य अपनी आत्मकथा ''विटनेस टु एन इरा'' के माध्यम से किया है। आपने अपने ग्रामीण प्रवास और उन वर्षों से गुजरते हुए, जब देश आजादी के संघर्ष के दौर से गुजर रहा था और हमें स्वतंत्रता विभाजन के साथ प्राप्त हुई थी, के संदर्भों को समेटते हुए लगभग नौ दशकों की अवधि के अनुभवों को कलमबद्ध किया है।

8. आप कई एक अकादमिक, वैज्ञानिक, व्यावसायिक तथा सरकारी निकायों में रहे हैं। आप अंतरराष्ट्रीय शुद्ध एवं प्रायोगिक रसायन यूनियन के इंटरनेशनल एजूकेशन ऑफ मेडिसिनल केमिस्ट्स संबंधी समिति के सदस्य रहे, जिसने इंटरनेशनल एजूकेशन ऑफ मेडिसिनल केमिस्ट्स पर प्रतिवेदन तैयार किया।

9. आपको कई एक वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए। आप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के राष्ट्रीय फेलो रहे हैं। आप भारतीय फार्मास्युटिकल कांग्रेस के जनरल प्रेसीडेंट रहे हैं। आपको भारतीय फार्मास्यूटिकल एसोसिएशन का प्रतिष्ठित फार्मासिस्ट पुरस्कार प्राप्त हुआ। कई एक निकायों द्वारा आपको लाइफटाइम एचीवमेन्ट्स के पुरस्कारों से नवाज़ा गया है; जिसमें हाल में ही पंजाब एकेडमी ऑफ साइंसेज द्वारा प्रदान किया गया लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड भी शामिल हैं। 'एकेडेमी इंटरनेशनेल डी हिस्टॅरी डी ला फैरेनसी' में आपका चयन करके एक इतिहासकार के रूप में आपके महत्व को पहचान दी गई। फिलाडेल्फिया स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ साइंसेज तथा पंजाब विश्वविद्यालय ने आपको विज्ञान की मानद उपधियों से विभूषित किया है।